पायनियर
बुधवार, 6 जून, 2012

# भारत के अनुभवों का लाभ उठाकर चीनी मिलें लगायेगा श्रीलंका: कूरे

**लखनऊ।** उन्नत गन्ना उत्पादन के विभिन्न तकीनीकों के विकास में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के वैज्ञानिकों के प्रयास सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। श्रीलंका के चीनी उद्योग को सशक्त बनाने में भारतीय वैज्ञानिकों की अहम भूमिका हो सकती है। श्रीलंका सरकार में माइनर फसल निर्यात एवं प्रोत्साहन मंत्री रेगीनाल्ड कूरे ने मंगलवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में अपनी यात्रा के दौरान उक्त बातें कहीं। मंत्री की अध्यक्षता में श्रीलंका सरकार का एक उच्चस्तरीय पाँच सदस्यों के दल ने तीन जून से पाँच जून तक भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ का दौरा किया। इस दौरा का मुख्य उद्देश्य भारत के चीनी उद्योग, गन्ना शोध एवं विकास से संबंधित प्रयासों का अध्ययन करना तथा यहाँ के सफल प्रयासों एवं उदाहरणों को श्रीलंका में अपनाकर वहाँ के चीनी उद्योग की खराब स्थिति को बेहतर करना है।

इस उच्च स्तरीय दल में श्रीलंकाई मंत्री श्री कूरे के अलावा, श्रीमती हेराथ, अतिरिक्त सचिव एसके साइरील, अध्यक्ष गन्ना शोध संस्थान डा. एनसी कुमारसिंघे, निदेशक गन्ना शोध संस्थान, श्रीलंका तथा चंद्रिका कूरे, सहायक सचिव शामिल थे। श्रीलंका के मंत्री श्री कूरे ने वहाँ के चीनी उद्योग की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गन्ना खेती लाभकारी नहीं होना, गन्ना खेती लागत का अधिक होना, किसानों का खेती में रूचि नहीं, निम्नस्तरीय तकनीकी इत्यादि के कारण श्रीलंका में गन्ना उपज 45 टन प्रति हेक्टेयर, चीनी परता 7 प्रतिशत तथा चीनी उपज 3.4 टन प्रति हेक्टेयर है। श्री कूरे ने बताया कि इस कारण श्रीलंका में कुल चीनी उत्पादन सिर्फ 5 प्रतिशत घरेलू आवश्यकता को पूरा कर पा रहा है। भारत का इस दिशा में प्रदर्शन सराहनीय है और यहाँ के वैज्ञानिकों तथा चीनी उद्योग के अनुभवों का लाभ प्राप्त कर श्रीलंका अगले कुछ वर्षों में चार नई चीनी मिलों का स्थापित करना चाहता है जिससे वहाँ गन्ना उत्पादकता में वृद्धि हो तथा चीनी उत्पादन को बढ़ाकर कुल घरेलू जरूरतों का 30 प्रतिशत तक देश में पैदा करने के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। श्री कूरे ने विज्ञान एवं प्राद्योगिकी क्रांति को इतिहास का सबसे बड़ा क्रांति बताया तथा कहा कि आज के वैज्ञानिक युग में दुनिया का हर देश एक दूसरे पर निर्भर है।

the pioneer
LUCKNOW WEDNESDAY | JUNE 6, 2012

# Indian scientists supporting our sugar industry: Cooray

PIONEER NEWS SERVICE
LUCKNOW

The dedicated efforts of the sugarcane scientists in developing technologies are indeed commendable and wonderful, said Reginald Cooray, Minister for Minor Export Crops Promotion, Government of Sri Lanka, during his visit to the Indian Institute of Sugarcane Research here on Monday.

A high-level five-member delegation from Sri Lanka was here on a three-day-long visit to IISR and sugar mills of UP to study the research and development activities of the Indian sugar industry.

The Sri Lankan delegation led by the minister comprised Herath, Additional Secretary, Minister for Minor Export Crops Promotion, SK Cyril, Chairman of the Sugarcane Research Institute and Dr NC Kumarsinghe, Director/CEO of Sugarcane Research Institute, Sri Lanka, and Chandrika Cooray, Assistant Secretary, MMECP.

The high cost of production, low yield, low profit margin, poor technology adoption and preference for cash crops like tea, rubber etc are some of the major problems of the Sri Lankan sugar industry due to which its sugarcane yield of 45 tonnes per hectare and its sugar recovery of 7 per cent are very low.

These factors compelled it to import 95 per cent of its domestic requirement of sugar from other countries as stated by its minister, Reginald Cooray.

He said that the Sri Lankan Government was trying hard to achieve the target to meet 30 per cent of its domestic sugar requirement from its own production in the near future. In this the rich and vast experience of the Indian sugarcane scientists and Indian sugar industry would not only be of immense help for Sri Lanka but it would also strengthen and improve the sugarcane and sugar scenario there, he said.

On the occasion Dr S Solomon, Director, IISR, gave a brief account of the present status of the Indian sugar industry and highlighted the technologies developed by it.

While addressing the scientists the Sri Lankan Minister, Reginold Cooray, said that in today's world of science and technology no country was independent and every country of the world was inter-dependent. Guided by this philosophy he urged the Indian scientists to extend all possible help for strengthening research and development in Sri Lanka in order to improve the cultivation of sugarcane there.